ISBN: 978-81-937100-3-6

लिंग परिप्रेक्ष्य

शाला, समाज एवं शिक्षा

डॉ. दिव्या शर्मा

लिंग परिप्रेक्ष्य, शाला, समाज एवं शिक्षा

लेखक

डॉ. दिव्या शर्मा,

एम.एस.सी, एम.एड., पी.एच.डी. (शिक्षा)

आईसीएसएसआर पोस्ट–डॉक्टोरल फैलो

सहायक प्राध्यापक,

रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

VEETRAGA RESEARCH FOUNDANTION

www.vrf.org.in

Publisher

Aditi Publication, Raipur, Chhattisgarh, INDIA

लिंग परिप्रेक्ष्य, शाला, समाज एवं शिक्षा

2019
Edition - **01**

लेखक
डॉ. दिव्या शर्मा,
एम.एस.सी, एम.एड., पी.एच.डी. (शिक्षा), आईसीएसएसआर,
पोस्ट–डॉक्टोरल फैलो, सहायक प्राध्यापक,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ISBN : **978-81-937100-3-6**

Copyright© All Rights Reserved
No parts of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of original publisher.

Price : Rs. **299/-**

Printed by
Yash Offest,
Lily Chowk, Purani Basti Raipur
Tahasil & District Raipur Chhattisgarh, India

Publisher :
Aditi Publication,
Near Ice factory, Opp Sakti Sound Service Gali,
Kushalpur, Raipur, Chhattisgarh, INDIA
+91 9425210308

प्राक्कथन

जन्म से निर्धारित जैविक लिंग जो कि पूर्ण रूपेण प्राकृतिक हैं, जिस जैविक लिंग के निर्धारण (संजुगन) में सामान्यतया जीव की भूमिका नही होती। इस जैविक लिंग के पालन पोषण के दौरान सामाजिक लिंग (जेंडर) का निर्माण ना केवल आवश्यक हैं, अपितु समुदाय में सामंजस्य तथा अन्य अनेक दृष्टिकोणों से उचित भी हैं।

परंतु क्या हो, जब इस आवश्यक व उचित मानक में किसी भी प्रकार की विकृति का मिश्रण हो जाए। ऐसी दशा में यह अनिवार्यता बन जाती है कि हम विषय की गहराई को समझने के लिए विषय के प्रत्येक आयाम का सूक्ष्म परीक्षण करने का प्रयास करें। ऐसी ही एक प्रयास यह पुस्तक है जो मूलतः शिक्षक–प्रशिक्षार्थियों के पाठ्यक्रम को दृष्टिगत करते हुए लिखी गई हैं। इसमें अध्यापक शिक्षा के प्रशिक्षार्थियों को जिन बिंदुओं का ज्ञान होना अनिवार्य माना गया हैं, उन सबकी विवेचना करने का प्रयास किया गया हैं।

माता – पिता ईश्वर के स्वरूप धरती पर मानव रूप में उस वटवृक्ष की भांति उपस्थित रहते हैं, जो सदैव संतान को अपनी छांव व जड़ों के द्वारा उसे संरक्षण व प्रदान करते हैं। जीवन की धूप–छांव के मध्य केवल माता–पिता वह संबंध हैं जो ना केवल आपकी सफलता अपितु आपके प्रत्येक प्रयास चाहे वह सफल हो या असफल हो, उसे सराहते है और प्रत्येक पग पर अपने सर्वस्व के साथ आपके लिए अपना सम्पूर्ण न्यौछावर करने के लिए प्रतिबद्ध रहते है।

मेरे माता–पिता के चरणों में मेरी यह किताब समर्पित!
उनके दीर्घायु होने की प्रार्थना के साथ!

डॉ. दिव्या शर्मा

अनुक्रमणिका

CH.	Title	Page
01.	लिंग, शाला एवं समुदाय	001
02.	लिंग, सेक्स, लैंगिकता, पितृसत्ता, पुरूषत्व एवं नारीत्व	025
03.	लिंग भेद, लिंग भूमिका व स्टीरियोटाइपिंग एवं इसके परिणाम	044
04.	लिंग तथा अन्य प्रकार की असमानताएं–जाति, वर्ग, जातियता, विकलांग आदि के संबंध में	053
05.	महिला लिंगानुपात और बाल लिंग अनुपात	057
06.	बालिकाओं की स्कूली शिक्षा (साक्षरता दर, ड्रॉप आउट दर, पूर्णता दर)	066
07.	स्कूल छोड़ने में लिंग की भूमिका	071
08.	बालिकाओं द्वारा स्कूली शिक्षा पूर्ण ना कर सकने के कारण	073
09.	बालिकाएं शाला में असहज क्यों महसूस करती हैं?	079
10.	अधिकाधिक बालिकाओं को शिक्षित करने के लिये आवश्यक शाला का स्वरूप।	083
11.	पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों में लिंग विभेद	093
12.	अदृश्य पाठ्यक्रम का विश्लेषण	100
13.	चुनौतिपूर्ण लिंग विभेद व रूढ़िबद्वता	102
14.	लिंग के परिपेक्ष्य से शाला के भीतर शिक्षक सहकर्मी समूह के आपसी संबंध	108

15.	तृतीय लिंग की अवधारणा	112
16.	महिलाओं के विरूद्व हिंसा– महिलाओं के विरूद्व वर्गीकृत हिंसा के अनुभवजन्य उदाहरण	117
17.	कार्य स्थल पर यौन उत्पीड़न	126
18.	महिलाओं के जीवन पर संघर्ष व हिंसा का प्रभाव	131
19.	महिलाओं के कानूनी अधिकार (यौनिक एवं प्रजनन)	139
20.	मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य	142
21.	नीति एवं प्रबंधन	145
22.	महिलाओं के विरूद्ध हिंसा के मुद्दों के समाधान हेतु प्रयास	154